हफ़्तावार रिसाला : 397
Weekly Booklet : 397

Faizane Lailatul Qadr (Hindi)

फ़ैज़ाने लयलयतुल क़द्र

नेक आ'माल के रिसाले की बरकत 07
तमाम भलाइयों से महरूम कौन ? 08
मुसल्मान, मोमिन और मुहाजिर की ता'रीफ़ 11
लयलतुल क़द्र पोशीदा क्यूं ? 17

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने लयलतुल क़द्र[1]

दुआए अ़त्तार : **या रब्बे करीम** ! जो कोई 26 सफ़ह़ात का रिसाला : **"फ़ैज़ाने लयलतुल क़द्र"** पढ़ या सुन ले उसे अपनी इ़बादत की तौफ़ीक़ दे और उसे मां बाप और ख़ान्दान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला अ़ता फ़रमा । اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस ने मुझ पर दिन में **एक हज़ार मर्तबा दुरूदे पाक** पढ़ा, वोह मरेगा नहीं जब तक **जन्नत** में अपना ठिकाना न देख ले ।" (الترغيب والترهيب، 2/328، حديث:22)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

लयलतुल क़द्र को "लयलतुल क़द्र" क्यूं कहते हैं ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **लयलतुल क़द्र** इन्तिहाई बरकत वाली रात है इस को **लयलतुल क़द्र** इस लिये कहते हैं कि इस में साल भर के अह़काम नाफ़िज़ किये जाते हैं और फ़िरिश्तों को साल भर के कामों और ख़िदमात पर मामूर किया जाता है और येह भी कहा गया है कि इस रात की दीगर रातों पर शराफ़त व क़द्र के बाइस इस को **लयलतुल क़द्र** कहते हैं और येह भी मन्क़ूल है कि चूंकि इस शब में नेक आ'माल मक़्बूल होते हैं और बारगाहे इलाही में उन की क़द्र की जाती है इस लिये इस को लयलतुल क़द्र कहते हैं । (تفسير خازن، 4/473) और भी मुतअ़द्दिद शराफ़तें इस मुबारक रात को ह़ासिल हैं ।

[1]... येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "फ़ैज़ाने रमज़ान" के सफ़ह़ा नम्बर 179 ता 201 से लिया गया है ।

बुख़ारी शरीफ़ में है, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "जिस ने लयलतुल क़द्र में ईमान और इख़्लास के साथ क़ियाम किया (या'नी नमाज़ पढ़ी) तो उस के गुज़श्ता (सग़ीरा) गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।" (بخاری،1/660،حدیث:2014)

83 साल 4 माह की इ़बादत से ज़ियादा सवाब

इस मुक़द्दस रात को हरगिज़ हरगिज़ ग़फ़्लत में नहीं गुज़ारना चाहिये, इस रात इ़बादत करने वाले को एक हज़ार माह या'नी तिरासी साल चार माह से भी ज़ियादा इ़बादत का सवाब अ़त़ा किया जाता है और इस "ज़ियादा" का इ़ल्म **अल्लाह** पाक जाने या उस के बताए से उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जानें कि कितना है। इस रात में ह़ज़रते जिब्रील عَلَیۡہِ السَّلَام और फ़िरिश्ते नाज़िल होते हैं और फिर इ़बादत करने वालों से मुसाफ़ह़ा करते हैं। इस मुबारक शब का हर एक लम्ह़ा सलामती ही सलामती है और येह सलामती सुब्ह़े सादिक़ तक बर क़रार रहती है। येह **अल्लाह** पाक का ख़ा़सुल ख़ा़स करम है कि येह अ़ज़ीम रात सिर्फ़ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को और आप صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े में आप صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत को अ़त़ा की गई है। **अल्लाह** पाक क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○ اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰہُ فِیۡ لَیۡلَۃِ الۡقَدۡرِ ۚ﴿۱﴾ وَ مَاۤ اَدۡرٰىکَ مَا لَیۡلَۃُ الۡقَدۡرِ ؕ﴿۲﴾ لَیۡلَۃُ الۡقَدۡرِ ۬ۙ خَیۡرٌ مِّنۡ اَلۡفِ شَہۡرٍ ؕ﴿۳﴾ تَنَزَّلُ الۡمَلٰٓئِکَۃُ وَ الرُّوۡحُ فِیۡہَا بِاِذۡنِ رَبِّہِمۡ ۚ مِنۡ کُلِّ اَمۡرٍ ۙ﴿۴﴾ سَلٰمٌ ۟ۛ ہِیَ حَتّٰی مَطۡلَعِ الۡفَجۡرِ ٪﴿۵﴾

(پ30،القدر:1تا5)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला। बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा और तुम ने क्या जाना, क्या शबे क़द्र ? शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर, इस में फ़िरिश्ते और जिब्रील उतरते हैं अपने रब के हुक्म से, हर काम के लिये, वोह सलामती है सुब्ह़ चमक्ने तक।

मुफ़स्सिरीने किराम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِم सूरतुल क़द्र के ज़िम्न में फ़रमाते हैं : “इस रात में **अल्लाह** पाक ने क़ुरआने करीम लौहे़ मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या पर नाज़िल फ़रमाया और फिर तक़रीबन 23 बरस की मुद्दत में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर इसे ब तदरीज नाज़िल किया।” (تفسیر صاوی، 6/2398)

नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** पाक ने मेरी उम्मत को **शबे क़द्र** अ़ता की और येह रात तुम से पहले किसी उम्मत को अ़ता नहीं फ़रमाई। (الفردوس بماثور الخطاب، 1/173، حدیث:647)

हज़ार महीनों से बेहतर एक रात

ह़ज़रते इमाम मुजाहिद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : बनी इसराईल का एक शख़्स सारी रात इ़बादत करता और इस त़रह़ उस ने हज़ार महीने गुज़ारे थे, तो **अल्लाह** पाक ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई : “﴿لَیۡلَۃُ الۡقَدۡرِ ۬ۙ خَیۡرٌ مِّنۡ اَلۡفِ شَہۡرٍ ؕ﴿ؔ۳﴾﴾(پ30، القدر:3)” (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर) या'नी शबे क़द्र का क़ियाम उस आ़बिद (या'नी इ़बादत गुज़ार) की एक हज़ार महीने की इ़बादत से बेहतर है।

(تفسیر طبری، 24/533 ملتقطاً)

हमारी उ़म्रें तो बहुत क़लील हैं

और “तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी” में है : ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने जब ह़ज़रते शम्ऊ़न رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की इ़बादात व जिहाद का तज़्किरा सुना तो उन्हें ह़ज़रते शम्ऊ़न رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ पर बड़ा रश्क आया और मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में अ़र्ज़ किया : “**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें तो बहुत थोड़ी उ़म्रें मिली हैं, इस में भी कुछ ह़िस्सा नींद में गुज़रता है तो कुछ त़लबे मआ़श में, खाने पकाने में और दीगर उमूरे

www.dawateislami.net

दुन्यवी में भी कुछ वक़्त सर्फ़ हो जाता है। लिहाज़ा हम तो ह़ज़रते शम्ऊ़न رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की त़रह़ इबादत कर ही नहीं सकते, यूं बनी इसराईल हम से इबादत में बढ़ जाएंगे।" उम्मत के ग़मख़्वार आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह सुन कर ग़मगीन हो गए। उसी वक़्त ह़ज़रते जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام सूरतुल क़द्र ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमते बा बरकत हो गए और तसल्ली दे दी गई कि प्यारे ह़बीब (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) रन्जीदा न हों, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को हम ने हर साल में एक ऐसी रात इनायत फ़रमा दी कि अगर वोह उस रात में इबादत करेंगे तो (ह़ज़रते) शम्ऊ़न (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) की हज़ार माह की इबादत से भी बढ़ जाएंगे। (تفسیر عزیزی،3/257ماخوذاً)

बा करामत शम्ऊ़न की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत

इन्ही ह़ज़रते शम्ऊ़न رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बारे में "मुकाशफ़तुल क़ुलूब" में एक निहायत ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत बयान की गई है, इस का मज़्मून कुछ इस त़रह़ है : बनी इसराईल के एक बुज़ुर्ग ह़ज़रते शम्ऊ़न رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने हज़ार माह इस त़रह़ इबादत की, कि रात को क़ियाम और दिन को रोज़ा रखने के साथ साथ **अल्लाह** पाक की राह में लड़ते। वोह इस क़दर त़ाक़त वर थे कि लोहे की वज़्नी और मज़बूत़ ज़न्जीरें हाथों से तोड़ डालते थे। कुफ़्फ़ारे ना हन्जार ने जब देखा कि ह़ज़रते शम्ऊ़न رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पर कोई भी ह़र्बा कारगर नहीं होता तो बाहम मश्वरा करने के बा'द मालो दौलत का लालच दे कर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ज़ौजा को इस बात पर आमादा कर लिया कि वोह किसी रात नींद की ह़ालत में पाए तो उन्हें मज़बूत़ रस्सियों से बांध कर इन के ह़वाले कर दे। बे वफ़ा बीवी ने ऐसा ही किया। जब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

बेदार हुए और अपने आप को रस्सियों से बंधा हुवा पाया तो फ़ौरन अपने आ'ज़ा को ह़रकत दी, देखते ही देखते रस्सियां टूट गईं और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आज़ाद हो गए। फिर अपनी बीवी से इस्तिफ़्सार किया : "मुझे किस ने बांध दिया था?" बे वफ़ा बीवी ने झूटमूट कह दिया कि मैं ने तो आप की त़ाक़त का अन्दाज़ा करने के लिये ऐसा किया था। बात रफ़्अ़ दफ़्अ़ हो गई।

बे वफ़ा बीवी मौक़अ़ की ताक में रही। एक बार फिर जब नींद का ग़लबा हुवा तो उस ज़ालिमा ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को लोहे की ज़न्जीरों में अच्छी त़रह़ जकड़ दिया। जूं ही आंख खुली, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक ही झटके में ज़न्जीर की एक एक कड़ी अलग कर दी और आज़ाद हो गए। बीवी येह देख कर सटपटा गई मगर फिर मक्कारी से काम लेते हुए वोही बात दोहरा दी कि मैं तो आप (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) को आज़्मा रही थी। दौराने गुफ़्त्गू (ह़ज़रते) शम्ऊ़न (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) ने अपनी बीवी के आगे अपना राज़ इफ़्शा (या'नी ज़ाहिर) करते हुए फ़रमाया : मुझ पर **अल्लाह** पाक का बड़ा करम है, उस ने मुझे अपनी विलायत का शरफ़ इनायत फ़रमाया है, मुझ पर दुन्या की कोई चीज़ असर नहीं कर सकती मगर, "मेरे सर के बाल।" चालाक औ़रत सारी बात समझ गई। आह! उसे दुन्या की मह़ब्बत ने अन्धा कर दिया था। आख़िर एक बार मौक़अ़ पा कर उस ने आप (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) को आप (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) ही के उन आठ गेसूओं (या'नी ज़ुल्फ़ों) से बांध दिया जिन की दराज़ी ज़मीन तक थी। (येह अगली उम्मत के बुज़ुर्ग थे, हमारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते गेसू आधे कान, पूरे कान और मुबारक कन्धों तक है, कन्धों से नीचे तक मर्द को बाल बढ़ाना ह़राम है) आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने

आंख खुलने पर ज़ोर लगाया मगर आज़ाद न हो सके। दुन्या की दौलत के नशे में बद मस्त बे वफ़ा औ़रत ने अपने नेक व पारसा शौहर को दुश्मनों के ह़वाले कर दिया।

कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार ने ह़ज़रते शम्ऊ़न (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) को एक सुतून से बांध दिया और इन्तिहाई बे दर्दी के साथ उन के होंट और कान काट डाले। तब उस नेक बन्दे ने **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ की, कि उसे इन बन्धनों को तोड़ने की क़ुव्वत बख़्शे और इन काफ़िरों पर येह सुतून मअ़ छत गिरा दे और उसे इन से नजात दे दे चुनान्चे **अल्लाह** पाक ने उन को क़ुव्वत बख़्शी वोह हिले तो उन के तमाम बन्धन टूट गए, तब उन्हों ने सुतून को हिलाया जिस की वज्ह से छत काफ़िरों पर आ गिरी और वोह सब हलाक हो गए और उस नेक बन्दे को **अल्लाह** पाक ने नजात बख़्शी।

(مکاشفۃ القلوب، ص306ماخوذاً)

आह ! हमें क़द्र कहां !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ख़ुदाए रह़मान अपने मह़बूबे ज़ीशान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत पर किस क़दर मेहरबान है और उस ने हम पर कैसा अ़ज़ीमुश्शान एह़सान फ़रमाया कि अगर शबे क़द्र में इ़बादत कर लें तो एक हज़ार माह से भी ज़ियादा की इ़बादत का सवाब पा लें। मगर आह ! हमें शबे क़द्र की क़द्र कहां ! एक सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी तो थे कि जिन की ह़सरत पर हम सब को इतना बड़ा इन्आ़म बिग़ैर किसी ख़्वाहिश के मिल गया ! बेशक उन्हों ने इस की क़द्र भी की मगर अफ़्सोस ! हम ना क़द्रे ही रहे ! आह ! हर साल मिलने वाले इस अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़म को हम ग़फ़्लत की नज़्र कर देते हैं।

नेक आ'माल के रिसाले की बरकत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शबे क़द्र की दिल में अ़ज़मत बढ़ाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। اِنْ شَآءَ الله मुसल्मानों को नेक नमाज़ी बनाने के तअ़ल्लुक़ से इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63 और त़लबए इ़ल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83, बच्चों और बच्चियों के लिये 40, स्पेशल परसनज़ (या'नी गूंगे बहरे और नाबीना इस्लामी भाइयों) के लिये 25 और क़ैदियों के लिये 52 नेक आ'माल ब सूरते सुवालात मुरत्तब किये गए हैं। जाएज़ा (या'नी अपने आ'माल का मुह़ासबा) करते हुए रोज़ाना नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के दा'वते इस्लामी के मक़ामी ज़िम्मेदार को हर माह की पहली तारीख़ को जम्अ़ करवाना होता है। नेक आ'माल ने न जाने कितने ही इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है ! इस की एक झलक मुलाह़ज़ा हो : एक इस्लामी भाई पर अ़लाक़े की मस्जिद के इमाम साहि़ब जो कि दा'वते इस्लामी से वाबस्ता थे, इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन के बड़े भाईजान को नेक आ'माल का एक रिसाला तोह़फ़े में दिया। वोह घर ले आए और पढ़ा तो ह़ैरान रह गए कि इस मुख़्तसर से रिसाले में एक मुसल्मान को इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का इतना ज़बर दस्त फ़ार्मूला दे दिया गया है ! नेक आ'माल का रिसाला मिलने की बरकत से اَلْحَمْدُ لِله उन को नमाज़ का जज़्बा मिला और नमाज़े बा जमाअ़त की अदाएगी के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो गए और पांच वक़्त के नमाज़ी बन गए, दाढ़ी मुबारक भी सजा ली और नेक आ'माल का रिसाला भी पुर करते।

आ़मिलीने नेक आ'माल के लिये बिशारते उ़ज़्मा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेक आ'माल का रिसाला पुर करने वाले किस क़दर खु़श क़िस्मत होते हैं इस का अन्दाज़ा इस मदनी बहार से लगाइये, चुनान्चे एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह ह़ल्फ़िय्या बयान है कि माहे रजबुल मुरज्जब 1426 हि. की एक शब मुझे ख़्वाब में मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की अ़ज़ीम सआ़दत मिली। लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी से मदनी इन्आ़मात[1] से मुतअ़ल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, **अल्लाह** पाक उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह रात हर त़रह़ से ख़ैरियत व सलामती की ज़ामिन है। येह रात अव्वल ता आख़िर रह़मत ही रह़मत है। मुफ़स्सिरीने किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم फ़रमाते हैं : "येह रात सांप बिच्छू, आफ़ातो बलिय्यात और शयात़ीन से भी मह़फ़ूज़ है, इस रात में सलामती ही सलामती है।"

तमाम भलाइयों से मह़रूम कौन ?

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : एक बार जब माहे रमज़ान शरीफ़ तशरीफ़ लाया तो सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारे पास येह महीना आया है जिस में एक रात ऐसी भी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है जो शख़्स इस रात से मह़रूम रह

1... दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ में अब मदनी इन्आ़मात को नेक आ'माल और फ़िक्रे मदीना को जाएज़ा लेना कहते है।

गया, गोया तमाम की तमाम भलाई से मह़रूम रह गया और इस की भलाई से मह़रूम नहीं रहता मगर वोह शख़्स जो ह़क़ीक़तन मह़रूम है।"

(ابنِ ماجہ، 2/298، حدیث:1644)

सब्ज़ झन्डा

एक फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़िस्सा है : "जब शबे क़द्र आती है तो हुक्मे इलाही से (ह़ज़रते) जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) एक सब्ज़ झन्डा लिये फ़िरिश्तों की बहुत बड़ी फ़ौज के साथ ज़मीन पर नुज़ूल फ़रमाते हैं (और एक रिवायत के मुत़ाबिक़ : "इन फ़िरिश्तों की ता'दाद ज़मीन की कंकरियों से भी ज़ियादा होती है")[1] और वोह सब्ज़ झन्डा का'बए मुअ़ज़्ज़मा पर लहरा देते हैं। (ह़ज़रते) जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) के सो बाज़ू हैं, जिन में से दो बाज़ू सिर्फ़ इसी रात खोलते हैं, वोह बाज़ू मशरिक़ व मग़रिब में फैल जाते हैं, फिर (ह़ज़रते) जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) फ़िरिश्तों को हुक्म देते हैं कि जो कोई मुसल्मान आज रात क़ियाम, नमाज़ या ज़िक्रुल्लाह में मश्ग़ूल है उस से सलाम व मुसाफ़ह़ा करो नीज़ उन की दुआ़ओं पर आमीन भी कहो। चुनान्चे सुब्ह़ तक येही सिल्सिला रहता है। सुब्ह़ होने पर (ह़ज़रते) जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) फ़िरिश्तों को वापसी का हुक्म देते हैं। फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : ऐ जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) **अल्लाह** पाक ने उम्मते मुह़म्मदिय्या की ह़ाजतों के बारे में क्या मुआ़मला फ़रमाया ? (ह़ज़रते) जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** पाक ने इन लोगों पर ख़ुसूसी नज़रे करम फ़रमाई और चार क़िस्म के लोगों के इ़लावा सब को मुआ़फ़ फ़रमा दिया।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह चार क़िस्म के लोग कौन हैं ?" इर्शाद फ़रमाया : "﴾1﴿ एक तो आ़दी शराबी ﴾2﴿ दूसरे

1 ...مسند احمد، 3/606، حدیث:10739

वालिदैन के ना फ़रमान ﴿3﴾ तीसरे क़त्ए़ रेह़मी करने वाले (या'नी रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात तोड़ने वाले) और ﴿4﴾ चौथे वोह लोग जो आपस में अ़दावत रखते हैं और आपस में क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ करने वाले।" (شعب الایمان،3/336،حدیث:3695)

लड़ाई का वबाल

ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए ताकि हम को शबे क़द्र के बारे में बताएं (कि किस रात में है) दो मुसल्मान आपस में झगड़ रहे थे। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं इस लिये आया था कि तुम्हें शबे क़द्र बताऊं लेकिन फ़ुलां फ़ुलां शख़्स झगड़ रहे थे, इस लिये इस का तअ़य्युन उठा लिया गया, और मुम्किन है कि इसी में तुम्हारी बेहतरी हो, अब इस को (आख़िरी अ़शरे की) नवीं, सातवीं और पांचवीं रातों में ढूंडो।"

(بخاری،1/663،حدیث:2033)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ मिरआतुल मनाजीह़ जिल्द 3 सफ़ह़ा 210 पर इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी मेरे इल्म से इस का तक़र्रुर दूर कर दिया गया और मुझे भुला दी गई, येह मत़लब नहीं कि ख़ुद शबे क़द्र ही ख़त्म कर दी अब वोह हुवा ही न करेगी। मा'लूम हुवा कि दुन्यावी झगड़े मन्ह़ूस हैं इन का वबाल बहुत ही ज़ियादा है इन की वज्ह से **अल्लाह** की आती हुई रह़मतें रुक जाती हैं।

हम तो शरीफ़ के साथ शरीफ़ और......

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मानों का आपस में लड़ाई झगड़ा करना रह़मत से दूरी का सबब बन जाता है। मगर आह ! अब कौन किस को समझाए ! आज तो बड़े फ़ख़्र से कहा जा रहा है कि "मियां इस

दुन्या में शरीफ़ रह कर तो गुज़ारा ही नहीं, हम तो शरीफ़ों के साथ शरीफ़ और बद मआ़श के साथ बद मआ़श हैं !" सिर्फ़ इस क़ौल ही पर इक्तिफ़ा नहीं, अब तो मा'मूली सी बात पर पहले ज़बान दराज़ी, फिर दस्त अन्दाज़ी, इस के बा'द चाकूबाज़ी बल्कि गोलियां तक चल जाती हैं। अफ़्सोस ! आज कल बा'ज़ मुसल्मान कभी पठान बन कर कभी शैख़ कहला कर और दीगर क़ौमिय्यत का ना'रा लगा कर एक दूसरे का गला काट रहे हैं, एक दूसरे की इम्लाक व अम्वाल को आग लगा रहे हैं। आपस में एक दूसरे के ख़िलाफ़ सिर्फ़ नस्ली और लिसानी फ़र्क़ की बिना पर महाज़ आराई हो रही है। मुसल्मानो ! आप तो एक दूसरे के मुहाफ़िज़ थे आप को क्या हो गया है ? हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान तो येह है कि : "मोमिनों की मिसाल तो एक जिस्म की त़रह़ है कि अगर एक उ़ज़्व को तक्लीफ़ पहुंचे तो सारा जिस्म उस तक्लीफ़ को मह़सूस करता है।" (بخاری،4/103،حدیث:6011)

एक शाइ़र ने कितने प्यारे अन्दाज़ में समझाया है :

मुब्तलाए दर्द कोई उ़ज़्व हो रोती है आंख किस क़दर हमदर्द सारे जिस्म की होती है आंख

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें आपस में लड़ाई झगड़ा करने के बजाए एक दूसरे की हमदर्दी और ग़म गुसारी करनी चाहिये। मुसल्मान एक दूसरे को मारने, काटने और लूटने वाला नहीं होता।

मुसल्मान, मोमिन और मुहाजिर की ता'रीफ़

ह़ज़रते फ़ज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम्हें मोमिन के बारे में ख़बर न दूं ?"

फिर इर्शाद फ़रमाया : “**मोमिन** वोह है जिस से दूसरे मुसल्मान अपनी जान और अपने अम्वाल से बे ख़ौफ़ हों और मुसल्मान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसल्मान महफ़ूज़ रहें और मुजाहिद वोह है जिस ने इताअ़ते ख़ुदावन्दी के मुआ़मले में अपने नफ़्स के साथ जिहाद किया और मुहाजिर वोह है जिस ने ख़ता और गुनाहों से अ़लाहदगी इख़्तियार की।” (مستدرک، 1/158، حدیث:24) और इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि दूसरे मुसल्मान की त़रफ़ आंख से इस त़रह़ इशारा करे जिस से तक्लीफ़ पहुंचे। (اتحاف السادۃ، 7/177) एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : किसी मुसल्मान को जाइज़ नहीं कि वोह किसी मुसल्मान को ख़ौफ़ज़दा करे। (ابو داؤد، 4/391، حدیث:5004)

त़रीक़े मुस्त़फ़ा को छोड़ना है वज्हे बरबादी   इसी से क़ौम दुन्या में हुई बे इक़्तिदार अपनी

ना क़ाबिले बरदाश्त ख़ारिश

ह़ज़रते मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : दोज़ख़ियों को ऐसी ख़ारिश में मुब्तला कर दिया जाएगा कि खुजाते खुजाते उन की खाल उधड़ जाएगी यहां तक कि उन में से किसी की हड्डियां ज़ाहिर हो जाएंगी। फिर निदा सुनाई देगी, ऐ फ़ुलां : क्या इस से तक्लीफ़ हो रही है ? वोह कहेगा : हां। तब उन्हें बताया जाएगा : “दुन्या में जो तुम मुसल्मानों को सताया करते थे येह उस की सज़ा है।” (اتحاف السادۃ، 7/175)

तक्लीफ़ दूर करने का सवाब

ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : “मैं ने एक शख़्स को जन्नत में घूमते हुए देखा कि जिधर चाहता है निकल जाता है क्यूं कि उस ने इस दुन्या में एक ऐसे दरख़्त को रास्ते से काट दिया था जो कि लोगों को तक्लीफ़ देता था।” (مسلم، ص1410، حدیث:2618)

लड़ना है तो नफ़्स के साथ लड़ो !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन अह़ादीसे मुबारका से दर्स ह़ासिल कीजिये और आपस में लड़ाई झगड़ा और लूटमार से परहेज़ कीजिये । अगर लड़ना ही है तो मरदूद शैत़ान से लड़िये, बल्कि ज़रूर लड़िये, नफ़्से अम्मारा से लड़ाई कीजिये, मगर आपस में भाई भाई बन कर रहिये ।

फ़र्द क़ाइम रब्ते मिल्लत से है तन्हा कुछ नहीं
मौज है दरिया में और बैरूने दरिया कुछ नहीं

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुरा रहे थे !

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में किसी क़िस्म का लिसानी और क़ौमी इख़्तिलाफ़ नहीं, हर ज़बान बोलने वाला और हर बरादरी से तअ़ल्लुक़ रखने वाला ताजदारे ह़रम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने करम ही में पनाह गुज़ीं है । आप भी हर दम दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये और इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में डूबी हुई ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये अपने आप को नेक आ'माल के सांचे में ढाल लीजिये । तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक ख़ुश गवार व ख़ुश्बूदार मदनी बहार आप के गोश गुज़ार की जाती है, आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में क़ाफ़िला कोर्स करने के लिये तशरीफ़ लाए हुए एक मुबल्लिग़ मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में सो रहे थे, सर की आंखें तो क्या बन्द हुई اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दिल की आंखें खुल गईं, आ़लमे ख़्वाब में देखा कि सरकारे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक

बुलन्द चबूतरे पर जल्वा अफ़्रोज़ हैं, क़रीब ही मदनी इन्आ़मात[1] के कार्डज़ की बोरियां रखी हैं। सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदनी इन्आ़मात के एक एक कार्ड को मुस्कुराते हुए बग़ौर मुलाहज़ा फ़रमा रहे हैं। फिर मेरी आंख खुल गई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

जादूगर का जादू नाकाम

ह़ज़रते इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : येह रात आफ़ात से सलामती की है कि इस में रह़मत और ख़ैर (या'नी भलाई) ही ज़मीन पर उतरती है। और न इस में शैत़ान बुराई करवाने की त़ाक़त रखता है और न जादूगर का जादू इस में चलता है। (تفسیر روح البیان، 10/485 ملخصاً)

अ़लामाते शबे क़द्र

ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने बारगाहे रिसालत में शबे क़द्र के बारे में सुवाल किया तो सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शबे क़द्र रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे की त़ाक़ रातों या'नी इक्कीसवीं, तेईसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताईसवीं या उन्तीसवीं शब में तलाश करो। तो जो कोई ईमान के साथ ब निय्यते सवाब इस मुबारक रात में इ़बादत करे, उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। उस की अ़लामात में से येह भी है कि वोह मुबारक शब खुली हुई, रौशन और बिल्कुल साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ होती है, इस में न ज़ियादा गरमी होती है न ज़ियादा सरदी बल्कि येह रात मो'तदिल होती है, गोया कि इस में चांद खुला हुवा होता है, इस पूरी रात में शयात़ीन को आस्मान के सितारे नहीं मारे जाते। मज़ीद

1... दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ में अब मदनी इन्आ़मात को नेक आ'माल कहते है।

निशानियों में से येह भी है कि इस रात के गुज़रने के बा'द जो सुब्ह आती है उस में सूरज बिग़ैर शुआअ के तुलूअ होता है और वोह ऐसा होता है गोया कि चौदहवीं का चांद। **अल्लाह** पाक ने इस दिन तुलूए आफ़्ताब के साथ शैतान को निकलने से रोक दिया है।" (इस एक दिन के इलावा हर रोज़ सूरज के साथ साथ शैतान भी निकलता है) (مسند امام احمد، 8/402، 414، حدیث:22829)

शबे क़द्र की पोशीदगी की हिक्मत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हदीसे पाक में फ़रमाया गया है कि रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अशरे की ताक़ रातों में या आख़िरी रात में से चाहे वोह 30वीं शब हो कोई एक रात शबे क़द्र है। इस रात को मख़्फ़ी (या'नी पोशीदा) रखने में एक हिक्मत येह भी है कि मुसल्मान इस रात की जुस्तजू (या'नी तलाश) में हर रात **अल्लाह** पाक की इबादत में गुज़ारने की कोशिश करें कि न जाने कौन सी रात, शबे क़द्र हो।

समुन्दर का पानी मीठा लगा (हिकायत)

हज़रते उस्मान बिन अबिल आस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के ग़ुलाम ने उन से अर्ज़ की : "ऐ आक़ा ! मुझे कश्तीबानी करते एक अर्सा गुज़रा, मैं ने समुन्दर के पानी में एक ऐसी अजीब बात महसूस की।" पूछा : "वोह अजीब बात क्या है ?" अर्ज़ की : "ऐ मेरे आक़ा ! हर साल एक ऐसी रात भी आती है कि जिस में समुन्दर का पानी मीठा हो जाता है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने ग़ुलाम से फ़रमाया : "इस बार ख़याल रखना जैसे ही रात में पानी मीठा हो जाए मुझे मुत्तलअ करना।" जब रमज़ान की सत्ताईसवीं रात आई तो ग़ुलाम ने आक़ा से अर्ज़ की, कि "आक़ा ! आज समुन्दर का पानी मीठा हो चुका है।" (تفسیرِ عزیزی، 3/258، تفسیر کبیر، 11/230) **अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

हमें अ़लामात क्यूं नज़र नहीं आतीं ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शबे क़द्र की मुतअ़द्दिद अ़लामात का ज़िक्र गुज़रा। हमारे ज़ेह्न में येह सुवाल उभर सकता है कि हमारी उ़म्र के काफ़ी साल गुज़रे हर साल शबे क़द्र आती और तशरीफ़ ले जाती है मगर हमें तो अब तक इस की अ़लामात नज़र नहीं आईं ? इस के जवाब में उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : इन बातों का तअ़ल्लुक़ कश्फ़ो करामत से है, इन्हें आ़म आदमी नहीं देख सकता। सिर्फ़ वोही देख सकता है जिस को बसीरत (या'नी क़ल्बी नज़र) की ने'मत ह़ासिल हो। हर वक़्त मा'सियत की नजासत में लतपत रहने वाला गुनहगार इन्सान इन नज़्ज़ारों को कैसे देख सकता है !

आंख वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे   दीदए कोर को क्या आए नज़र क्या देखे

त़ाक़ रातों में ढूंडो

तमाम मुसल्मानों की अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से रिवायत है : नबियों के सरताज, साहि़बे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शबे क़द्र, रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे की त़ाक़ रातों (या'नी इक्कीसवीं, तेईसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताईसवीं और उन्तीसवीं रातों) में तलाश करो।" (بخاری، 1/661، حدیث:2017)

आख़िरी सात रातों में तलाश करो

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا रिवायत करते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'ज़ सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم को ख़्वाब में आख़िरी सात रातों में शबे क़द्र दिखाई गई। मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं देखता हूं कि तुम्हारे ख़्वाब आख़िरी

सात रातों में मुत्तफ़िक़ हो गए हैं। इस लिये इस का तलाश करने वाला इसे आख़िरी सात रातों में तलाश करे।" (بخاری،1/660،حدیث:2015)

लयलतुल क़द्र पोशीदा क्यूं ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक की सुन्नते करीमा है कि उस ने बा'ज़ अहम तरीन मुआ़मलात को अपनी मशिय्यत से बन्दों पर पोशीदा रखा है। जैसा कि मन्कूल है : "**अल्लाह** पाक ने अपनी **रिज़ा** को नेकियों में, अपनी **नाराज़ी** को गुनाहों में और अपने **औलिया** رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِم को अपने बन्दों में पोशीदा रखा है।" (अख़्लाकुस्सालिह़ीन, स. 56) इस का ख़ुलासा है कि बन्दा छोटी समझ कर कोई नेकी न छोड़े। क्यूं कि वोह नहीं जानता कि **अल्लाह** पाक किस नेकी पर राज़ी होगा, हो सकता है ब ज़ाहिर छोटी नज़र आने वाली नेकी ही से **अल्लाह** पाक राज़ी हो जाए। मसलन क़ियामत के रोज़ एक गुनहगार शख़्स सिर्फ़ इस नेकी के इ़वज़ बख़्श दिया जाएगा कि उस ने एक प्यासे कुत्ते को दुन्या में पानी पिला दिया था। इसी त़रह़ अपनी नाराज़ी को गुनाहों में पोशीदा रखने की ह़िक्मत येह है कि बन्दा किसी गुनाह को छोटा तसव्वुर कर के कर न बैठे, बस हर गुनाह से बचता रहे। क्यूं कि वोह नहीं जानता कि **अल्लाह** पाक किस गुनाह से नाराज़ हो जाएगा। इसी त़रह़ औलिया رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِم को बन्दों में इस लिये पोशीदा रखा है कि इन्सान हर नेक ह़क़ीक़ी पाबन्दे शरअ़ मुसल्मान की रिआ़यत व ता'ज़ीम बजा लाए क्यूं कि हो सकता है कि "वोह" **वलिय्युल्लाह** हो। जब हम नेक लोगों की दिल से ता'ज़ीम किया करेंगे, बद गुमानी से बचते रहेंगे और हर मुसल्मान को अपने से अच्छा तसव्वुर करने लगेंगे तो हमारा मुआ़शरा भी सह़ीह़ हो जाएगा और اِنۡ شَآءَاللہ हमारी आ़क़िबत भी संवर जाएगी।

हिक्मतों के मदनी फूल

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "तफ़्सीरे कबीर" में फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने शबे क़द्र को चन्द वुजूह की बिना पर पोशीदा रखा है। अव्वल येह कि जिस त़रह़ दीगर अश्या को पोशीदा रखा, मसलन **अल्लाह** पाक ने अपनी रिज़ा को इत़ाअ़तों में पोशीदा फ़रमाया ताकि बन्दे हर इत़ाअ़त में रग़बत ह़ासिल करें। अपने ग़ज़ब को गुनाहों में पोशीदा फ़रमाया कि हर गुनाह से बचते रहें। अपने वली को लोगों में पोशीदा रखा ताकि लोग सब की ता'ज़ीम करें, क़बूलिय्यते दुआ़ को दुआ़ओं में पोशीदा रखा कि सब दुआ़ओं में मुबालग़ा करें और इस्मे आ'ज़म को अस्मा में पोशीदा रखा कि सब अस्मा की ता'ज़ीम करें और सलाते वुस्त़ा को नमाज़ों में पोशीदा रखा कि तमाम नमाज़ों पर मुह़ाफ़ज़त (या'नी हमेशगी इख़्तियार) करें और क़बूले तौबा को पोशीदा रखा कि बन्दा तौबा की तमाम अक़्साम पर हमेशगी इख़्तियार करे, और मौत का वक़्त पोशीदा रखा कि मुकल्लफ़ (बन्दा) ख़ौफ़ खाता रहे। इसी त़रह़ शबे क़द्र को भी पोशीदा रखा कि रमज़ानुल मुबारक की तमाम रातों की ता'ज़ीम करे। दूसरे येह कि गोया **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : "अगर मैं शबे क़द्र को मुअ़य्यन (Fix) कर (के तुझ पर ज़ाहिर फ़रमा) देता और येह कि मैं गुनाह पर तेरी जुरअत भी जानता हूं तो अगर कभी शहवत तुझे इस रात में मा'सियत के कनारे ला छोड़ती और तू गुनाह में मुब्तला हो जाता तो तेरा इस रात को जानने के बा वुजूद गुनाह करना ला इल्मी के साथ गुनाह करने से बढ़ कर सख़्त होता, पस इस वज्ह से मैं ने इसे पोशीदा रखा। तीसरे येह कि मैं ने इस रात को पोशीदा रखा ताकि बन्दा इस की त़लब में मेह़नत करे और इस मेह़नत का

सवाब कमाए। चौथे येह कि जब बन्दे को शबे क़द्र का तअ़य्युन ह़ासिल न होगा तो रमज़ानुल मुबारक की हर रात में **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़त में कोशिश करेगा इस उम्मीद पर कि हो सकता है येही रात शबे क़द्र हो।"

(تفسیرِ کبیر، 11/29 ملخصاً)

साल में कोई सी भी रात शबे क़द्र हो सकती है

शबे क़द्र के तअ़य्युन में उ़लमाए किराम का काफ़ी इख़्तिलाफ़ पाया जाता है यहां तक कि बा'ज़ बुज़ुर्गों के नज़्दीक शबे क़द्र पूरे साल में फिरती रहती है, मसलन फ़क़ीहुल उम्मह ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का फ़रमान है : शबे क़द्र वोही शख़्स पा सकता है जो पूरे साल की रातों पर तवज्जोह रखे। (تفسیر کبیر، 11/230) इस क़ौल की ताईद करते हुए इमामुल आ़रिफ़ीन शैख़ मुह़युद्दीन इब्ने अ़रबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं शब (या'नी शबे बराअत) और एक बार शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म ही की उन्नीसवीं शब में शबे क़द्र पाई है। नीज़ रमज़ानुल मुबारक की तेरहवीं शब और अठ्ठारहवीं शब में भी देखी, और मुख़्तलिफ़ सालों में रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे की हर ताक़ रात में इसे पाया है। मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर्चे ज़ियादा तर शबे क़द्र रमज़ान शरीफ़ में ही पाई जाती है ताहम मेरा तजरिबा तो येही है कि येह पूरा साल घूमती रहती है। या'नी हर साल के लिये इस की कोई एक ही रात मख़्सूस नहीं है।

(اتحاف السادۃ، 4/392 ملخصاً)

रह़मते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मअ़ शैख़ैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا जल्वा गरी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में रमज़ानुल मुबारक के

ए'तिकाफ़ की ख़ूब बहारें होती हैं, मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर इस्लामी भाई मसाजिद में और इस्लामी बहनें "मस्जिदे बैत" में ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल करते और ख़ूब जल्वे समेटते हैं तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार की जाती है : एक शख़्स फ़िल्मों का ऐसा रसिया था कि अपने गांव की सीडीज़ की दुकान की तक़रीबन आधी सीडीज़ देख चुका था। اَلْحَمْدُلِلّٰه उसे गांव की मदनी मस्जिद में आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (1422 हि., 2001 ई.) के ए'तिकाफ़ की सआ़दत नसीब हो गई। दा'वते इस्लामी के आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकतों के क्या कहने! 27 रमज़ानुल मुबारक का ना क़ाबिले फ़रामोश ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ तह़्दीसे ने'मत के लिये बयान किया कि शब भर बेदार रह कर उन्हों ने ख़ूब रो रो कर सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दीदार की भीक मांगी। اَلْحَمْدُلِلّٰه सुब्ह़ दम उन पर बाबे करम खुल गया, उन्हों ने आ़लमे गुनूदगी में अपने आप को किसी मस्जिद के अन्दर पाया, इतने में किसी ने ए'लान किया : "सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाएंगे और नमाज़ की इमामत फ़रमाएंगे।" कुछ ही देर में रह़मते कौनैन, नानाए ह़सनैन, मअ़ शैख़ैने करीमैन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم و رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا जल्वा नुमा हो गए और उन की आंख खुल गई। सिर्फ़ एक झलक नज़र आई और वोह ह़सीन जल्वा निगाहों से ओझल हो गया, इस पर दिल एक दम भर आया और आंखों से सैले अश्क रवां हो गए यहां तक कि रोते रोते उन की हिचकियां बंध गईं ऐ काश!

इतनी मुद्दत तक हो दीदे मुस्ह़फ़े आ़रिज़ नसीब
ह़िफ़्ज़ कर लूं नाज़िरा पढ़ पढ़ के क़ुरआने जमाल

(ज़ौक़े ना'त, स. 164)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस के बा'द उन के दिल में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की मह़ब्बत और बढ़ गई बल्कि वोह दा'वते इस्लामी ही का हो कर रह गए। घर से तरकीब बना कर उन्हों ने शहर का रुख किया और दर्से निज़ामी करने के लिये जामिअ़तुल मदीना में दाखि़ला ले लिया। जब येह बयान दिया उस वक़्त दरजए ऊला में इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के साथ साथ तन्ज़ीमी त़ौर पर एक ज़ैली ह़ल्के़ के क़ाफ़िला ज़िम्मादार की है़सिय्यत से दा'वते इस्लामी के दीनी कामों की धूमें मचाने की कोशिश कर रहे थे।

जल्वए यार की आरज़ू है अगर, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मीठे आक़ा करेंगे करम की नज़र, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 639)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

इमामे आ'ज़म, इमामे शाफ़ेई और साहि़बैन के अक़्वाल

इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से इस बारे में दो क़ौल मन्क़ूल हैं : ﴾1﴿ लयलतुल क़द्र रमज़ानुल मुबारक ही में है लेकिन कोई रात मुअ़य्यन (Fix) नहीं ﴾2﴿ इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का एक मश्हूर क़ौल येह है कि लयलतुल क़द्र पूरा साल घूमती रहती है, कभी माहे रमज़ानुल मुबारक में होती है और कभी दूसरे महीनों में। येही क़ौल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द और ह़ज़रते इ़करमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم से भी मन्क़ूल है। (عمدۃ القاری، 8/253، تحت الحدیث:2015)

इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के नज़्दीक "शबे क़द्र" रमज़ानुल मुबारक के आखि़री अ़शरे में है और इस की रात मुअ़य्यन (Fix) है, इस में क़ियामत तक तब्दीली नहीं होगी। (عمدۃ القاری، 8/253، تحت الحدیث:2015)

www.dawateislami.net

इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا के नज़्दीक लयलतुल क़द्र रमज़ानुल मुबारक ही में है लेकिन कोई रात मुअ़य्यन (Fix) नहीं। और इन का एक क़ौल येह है कि रमज़ानुल मुबारक की आख़िरी पन्दरह रातों में लयलतुल क़द्र होती है। (عمدة القاری، 8/253، تحت الحدیث:2015)

शबे क़द्र बदलती रहती है

इमामे मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के नज़्दीक शबे क़द्र रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे की ताक़ रातों में होती है। मगर कोई एक रात मख़्सूस नहीं, हर साल इन ताक़ रातों में घूमती रहती है, या'नी कभी इक्कीसवीं शब लयलतुल क़द्र हो जाती है तो कभी तेईसवीं, कभी पच्चीसवीं तो कभी सत्ताईसवीं और कभी कभी उन्तीसवीं शब भी शबे क़द्र हो जाया करती है। (عمدة القاری، 1/335)

शैख़ अबुल ह़सन शाज़िली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और शबे क़द्र

सिल्सिलए क़ादिरिय्या शाज़िलिय्या के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते शैख़ अबुल ह़सन शाज़िली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा 656 हि.) फ़रमाते हैं : "जब कभी इतवार या बुध को पहला रोज़ा हुवा तो उन्तीसवीं शब, अगर पीर का पहला रोज़ा हुवा तो इक्कीसवीं शब, अगर पहला रोज़ा मंगल या जुमुआ़ को हुवा तो सत्ताईसवीं शब अगर पहला रोज़ा जुमे'रात को हुवा तो पच्चीसवीं शब और अगर पहला रोज़ा हफ़्ते को हुवा तो मैं ने तेईसवीं शब में शबे क़द्र को पाया।" (تفسیرِ صاوی، 6/2400)

सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र

अगर्चे बुज़ुर्गाने दीन और मुफ़स्सिरीन व मुहद्दिसीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم का शबे क़द्र के तअ़य्युन में इख़्तिलाफ़ है, ताहम भारी अक्सरिय्यत की राय

येही है कि हर साल माहे रमज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं शब ही शबे क़द्र है। ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के नज़्दीक सत्ताईसवीं शबे रमज़ान ही "शबे क़द्र" है। (مسلم، ص383، حدیث:762)

ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ भी फ़रमाते हैं कि शबे क़द्र रमज़ान शरीफ़ की सत्ताईसवीं रात होती है। अपने बयान की ताईद के लिये उन्हों ने दो दलाइल बयान फ़रमाए हैं : ﴾1﴿ "लयलतुल क़द्र" में नव हुरूफ़ हैं और येह कलिमा सूरतुल क़द्र में तीन मर्तबा है, इस त़रह़ "तीन" को "नव" से ज़र्ब देने से ह़ासिले ज़र्ब "सत्ताईस" आता है जो कि इस बात की त़रफ़ इशारा करता है कि शबे क़द्र सत्ताईसवीं रात है। ﴾2﴿ इस सूरए मुबारका में तीस कलिमात (या'नी तीस अल्फ़ाज़) हैं। सत्ताईसवां कलिमा "هِیَ" है जिस का मर्कज़ लयलतुल क़द्र है। गोया **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से नेक लोगों के लिये येह इशारा है कि रमज़ान शरीफ़ की सत्ताईसवीं को शबे क़द्र होती है। (تفسیرِ عزیزی، 3/259ملخصاً)

गोया शबे क़द्र ह़ासिल कर ली

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ[1]" तीन मर्तबा पढ़ा तो उस ने गोया शबे क़द्र ह़ासिल कर ली। (ابنِ عساکر، 65/276) हो सके तो हर रात तीन बार येह दुआ़ पढ़ लेनी चाहिये।

1... **तरजमा :** या'नी **अल्लाह** पाक के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं जो ह़िल्म व करम वाला है, **अल्लाह** पाक है जो सातों आस्मानों और बड़े अ़र्श का मालिक है।

रिज़ाए इलाही के ख़्वाहिश मन्दो ! हो सके तो सारा ही साल हर रात एहतिमाम के साथ कुछ न कुछ नेक अ़मल कर लेना चाहिये कि न जाने कब **शबे क़द्र** हो जाए। हर रात में दो फ़र्ज़ नमाज़ें आती हैं, दीगर नमाज़ों के साथ साथ मग़रिब व इ़शा की नमाज़ों की जमाअ़त का भी ख़ूब एहतिमाम होना चाहिये कि अगर शबे क़द्र में इन दोनों की जमाअ़त नसीब हो गई तो اِنْ شَآءَ الله बेड़ा ही पार है, बल्कि इसी त़रह़ पांचों नमाज़ों के साथ साथ रोज़ाना इ़शा व फ़ज्र की जमाअ़त की भी ख़ुसूसिय्यत के साथ आ़दत डाल लीजिये। दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों : ﴾1﴿ जिस ने इ़शा की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ी उस ने गोया आधी रात क़ियाम किया और जिस ने फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की उस ने गोया पूरी रात क़ियाम किया। (مسلم، ص329، حدیث:656) ﴾2﴿ "जिस ने इ़शा की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ी तह़क़ीक़ उस ने लयलतुल क़द्र से अपना ह़िस्सा ह़ासिल कर लिया।"

(معجم کبیر، 8/179، حدیث:7745)

अल्लाह पाक की रह़मत के मुतलाशियो ! अगर तमाम साल येही आ़दते जमाअ़त रही तो शबे क़द्र में भी इन दोनों नमाज़ों की जमाअ़त اِنْ شَآءَ الله नसीब हो जाएगी और रात भर सोने के बा वुजूद اِنْ شَآءَ الله रोज़ाना की त़रह़ शबे क़द्र में भी गोया सारी रात की इ़बादत करने वाले क़रार पाएंगे।

शबे क़द्र की दुआ़

तमाम मुसल्मानों की अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में

अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर मुझे शबे क़द्र का इ़ल्म हो जाए तो क्या पढ़ूं ?" फ़रमाया : "इस त़रह़ दुआ़ मांगो : اَللّٰھُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِیۡمٌ تُحِبُّ الۡعَفۡوَ فَاعۡفُ عَنِّیۡ या'नी ऐ **अल्लाह** ! बेशक तू मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है और मुआ़फ़ी देना पसन्द करता है लिहाज़ा मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे ।" (ترمذی،5/306،حدیث:3524)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! काश ! हम रोज़ाना रात येह दुआ़ कम अज़ कम एक बार ही पढ़ लिया करें कि कभी तो शबे क़द्र नसीब हो जाएगी । और सत्ताईसवीं शब तो येह दुआ़ बारहा पढ़नी चाहिये ।

शबे क़द्र के नवाफ़िल

ह़ज़रते इस्माईल ह़क़्क़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ "तफ़्सीरे रूहुल बयान" में येह रिवायत नक़्ल करते हैं : जो शबे क़द्र में इख़्लासे निय्यत से नवाफ़िल पढ़ेगा उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे । (تفسیر روح البیان،10/480)

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी दस दिन आते तो इ़बादत पर कमर बांध लेते, उन में रातें जागा करते और अपने अह्ल को जगाया करते । (ابنِ ماجہ،2/357،حدیث:1768)

ह़ज़रते इस्माईल ह़क़्क़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ नक़्ल करते हैं कि बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِم इस अ़शरे की हर रात में दो रक्अ़त नफ़्ल शबे क़द्र की निय्यत से पढ़ा करते थे । नीज़ बा'ज़ अकाबिर से मन्क़ूल है कि जो हर रात दस आयात इस निय्यत से पढ़ ले तो इस की बरकत और सवाब से मह़रूम न होगा ।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन येह रात मम्बए़ बरकात है । चुनान्चे ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं : एक बार जब माहे

रमज़ान शरीफ़ तशरीफ़ लाया तो हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारे पास येह महीना आया है जिस में एक रात ऐसी भी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है जो शख़्स इस रात से मह़रूम रह गया, गोया तमाम की तमाम भलाई से मह़रूम रह गया और इस की भलाई से मह़रूम नहीं रहता मगर वोह शख़्स जो ह़क़ीक़तन मह़रूम है।" (ابنِ ماجہ،2/298،حدیث:1644)

ऐ हमारे प्यारे प्यारे अल्लाह पाक ! अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल हम गुनाहगारों को **लयलतुल क़द्र** की बरकतों से मालामाल कर और ज़ियादा से ज़ियादा अपनी इ़बादत की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

लयलतुल क़द्र में मत़्लइ़ल फ़ज्रे ह़क़ — मांग की इस्तिक़ामत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 299)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़हा
लयलतुल क़द्र को "लयलतुल क़द्र" कहने की वज्ह	1
हज़ार महीनों से बेहतर एक रात	1
हमारी उ़म्रें तो बहुत क़लील हैं	3
आह ! हमें क़द्र कहां !	3
नेक आ'माल के रिसाले की बरकत	3
आ़मिलीने नेक आ'माल के लिये बिशारते उ़ज़्मा	4
तमाम भलाइयों से महरूम कौन ?	5
लड़ाई का वबाल	6
हम तो शरीफ़ के साथ शरीफ़ और......	6
मुसल्मान, मोमिन और मुहाजिर की ता'रीफ़	6
तक्लीफ़ दूर करने का सवाब	6
जादूगर का जादू नाकाम	7
अ़लामाते शबे क़द्र	9
शबे क़द्र की पोशीदगी की हिक्मत	13
हमें अ़लामात क्यूं नज़र नहीं आतीं ?	13
शबे क़द्र ताक़ रातों में ढूंडो	14
लयलतुल क़द्र पोशीदा क्यूं ?	15
हिक्मतों के मदनी फूल	15
कोई भी रात शबे क़द्र हो सकती है	17
शबे क़द्र बदलती रहती है	18
सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र	20
गोया शबे क़द्र हासिल कर ली	22
शबे क़द्र की दुआ़	24
शबे क़द्र के नवाफ़िल	25

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ